Volume - VI, 2013 J. K. TIMES
A Multidisciplinary International Journal

दलित साहित्य - ओमप्रकाश बाल्मीकि

रामजीत प्रसाद
Assistant Professor
Department of Hindi, J. K. College, Purulia

सार संक्षेप :

दलित साहित्य मनुष्य को केन्द्र मानता है, मनुष्य को महानता प्रदान करता है। मानवी स्वातंत्र्य का जी जान से उद्घोष करता है। दलित चिंतकों में प्रमुख ओमप्रकाश बाल्मीकि का दलित साहित्य में दलित विमर्श को आगे बढ़ानें में महत्वपूर्ण योगदान हैं। भारतीय जीवन मे जाति के अस्तित्व ने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षणिक जीवन को किस तरह प्रभावित किया है। साहित्य भी इससे अछुता नहीं है। साहित्य में जहाँ पिछले कुछ वर्षों में न लिखने के कारण' पर बहस छिड़ी रही है, वही श्री वाल्मीकि ने' मेरे लिखने के कारण लिखकर समाज की आँरव रवोलनें की कोशिश की है। उनकी रचना प्रक्रिया में कैसे 'अस्मिता की तलाश' एक बड़ा सरोकार बनता है, दलित चेतना और हिन्दी कथा साहित्य का संबंन्ध कैसा रहा है, दलित नैतिकता भारतीय वर्चस्ववाद के बीच संघर्ष का रूप क्या है और जाति व्यवस्था में दलित उत्पीड़न के चलते कैसी गलत परंपरा का विकास हुआ इसी गंम्भीर समस्या पर लेखक अपने विचारो द्वारा समाज के नग्न सच को अपनी रचना प्रक्रिया के जरिये सामनें लाते है।

मुख्य शब्दावली : अस्मिता, नैतिकता, मुक्ति

भूमिका

दलित साहित्य का सौन्दर्य विचार अंबेडकर सोच का प्रतिफल है और दलित साहित्य का सौन्दर्य मूल्य सामाजिक मूल्य है। दलित साहित्य अर्थात दलित चेतना से दलितों के विषय मे किया गया लेखन। दलित साहित्य का स्वरूप उसके अन्तगर्त होने वाले दलित्व में है और उसका प्रयोजन स्पष्ट है। उसका लक्ष्य है दलित समाज को गुलामी से अवगत कराना, उसे इस गुलामी के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए प्रेरित करना और सवर्ण समाज के समक्ष अपनी ब्यथा और वेदनाओं का बयान करना।

दलित साहित्य और ओमप्रकाश बाल्मीकि

'सत्य शिव और सुंदरम' के भेदभाव की कल्पना से मनुष्य को बाहर निकालना। शरण कुमार लिंबाले के शब्दों में — मनुष्य सर्वप्रथम मनुष्य है, यही सत्य है। मनुष्य की स्वतंत्रता ही शिव है। मनुष्य की मनुष्यता ही सौन्दर्य है। विश्व में मनुष्य जैसी सत्य और सुंदर दूसरी चीज नही है। इसलिए तो मनुष्य की समता स्वतंन्त्रता न्याय और बंधुत्व की चर्चा होनी आवश्यक है और यही दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र है।

दलितों का दुःख, परेशानी, गुलामी, अध:पतन और उपहास के साथ ही दद्रिता का कलात्मक